{ 10 }

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-87-2

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 10

Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

उकड़ू समय

मास डेढ़क करीबसँ सहदेव बाबासँ भेँट नै भेने मन उवियाइत रहए। गाम-घरमे होइतो अहिना छइ। अखनो तँ गाम गामे छी मुदा गामे तँ समाजो छीहे। शहर-बजारसँ फराक अछिए। फराको होइक कारण अछि। जे शहर जेते नमहर तइमे तेते दूर-दूरक लोक आबि बसैए जइसँ ने पैछला कोनो इतिहास रहै छै आ ने वर्तमानक कोनो एकरूपते रहै छइ। सबहक अपन-अपन धंधाक काज, अपन-अपन विधि-बेवहार, जइसँ चालि-ढालिमे दूरी भइये जाइ छइ। मुदा गाम-समाजक से नै अछि। भूतसँ वर्तमान धरिक उचित-उपकारक सम्बन्ध बनल चलि आबि रहल अछि।

लोकमे एहेन धारणा रहिते अछि जे फल्लाँक बाबा हमरा बाबाकेँ बेरपर काज देने रहथिन तँए हमरो उचित बनैए जे फल्लाँकेँ बेरपर ठाढ़ होइऐ। मुदा से सभ नै रहै, जहिना सभकेँ सभसँ भेँट-घाँट भेने देखा-देखी हूबा बढ़ैए तैसंग मनसूबो बढ़िते अछि। ओना, गाम-घरमे चौक-चौराहा भेने पहिलुका अपेक्षा भेँट-घाँट हएब असान भऽ गेल अछि मुदा एहनो लोकक कमी तँ नहियेँ अछि जे अनेरे समय नै गमबै छैथ।

सहदेवो बाबा तेहनेमे सँ छैथ। ओना, भेँटो-घाँटक केते उपाय अछिए। आनोसँ भेँट भेने जानकारी भेटते अछि, तैसंग नीक-अधला

काज भेने सेहो चरचामे एने भेँट होइते अछि। मुदा जे भेँट मुहाँ-मुहीं कुशल-छेम बुझने होइए ओ तँ दोसर नहियेँ होइए। तहूमे जे सहदेव बाबा एक-ने-एक बेर दिनमे जरूर भेँट भऽ जइ छला, डेढ़ मास तिनकासँ नै भेँट भेने मन उवियेबे करत। सहए भेल। ओना, नै भेँट हेबाक कारणो चोराएल नहियेँ अछि। समैये उकड़ू भऽ गेल अछि। सभ अपने-अपने व्यस्त भऽ गेल छैथ। ओना, उकड़ू समय भेने व्यस्तता बढ़ितो अछि आ घटितो अछि। जे सोभाविको अछिए। एक दिस हाथक काज छीना गेने व्यस्तता कमैए तँ दोसर दिस दोसर काज उपस्थित भेने बढ़ितो अछि। सहदेव बाबासँ भेँट करैले मन एते उविया गेल जे कोनो काजमे नजैर सन्हियेबे ने करए। जाबे मनमे काज नै सन्हियाएत ताबे देहो-हाथ अलसाएले रहत। मनमे भेल जे अनेरे माथमे भेँट करैक बोझ बनल अछि, से नै तँ जा कऽ भेँट कऽ अबयैन। मुदा फेर हुअए जे भेँटो करैक तँ किछु बहाना होइ छै, से कथी बहाना बनाएब। अनेरे भेँट करए जाइ आ पुछि दैथ जे 'केमहर आएल छेलह' तँ की कहबैन?

ओना, समय जेहेन उकड़ू भऽ गेल अछि तेहेनमे काजक बहाना नइ बल्कि बोल-भरोसक जरूरत तँ अछिए। तकले काजो आ तकले बहन्नो तँ अछिए। विदा भेलौं...।

रस्ता कातमे तीन-चारिटा दोकान एकठाम अछि। सहदेव बाबाकेँ दोकानपर देखलयैन। देखते मनमे खुशी भेल जे रस्तेमे बाबा भेट गेला। भेटला तँ मुदा भेँट होइमे समय लागत। किछु कीनए दोकान आएल छैथ। दोकानक हिसाबे भीड़ बेसी। ओही भीड़मे सहदेव बाबा ठाढ़। हुनका ठाढ़ देख मनमे कनी कठाइनो लागल, कठाइन ई लागल- दोकनदार केहेन अछि जे बुढ़ो-बुढ़ानुसक विचार ने करैए। जुआने-जहान जकाँ ठाढ़ केने छैन। मुदा किए केने छैन से तँ ओ जानए। दोकनदारपर सँ तामस घुसैक कऽ धियो-पुतो आ चेतनोपर गेल। कहू जे केहेन धिया-पुता आकि चेतने भऽ गेल अछि जे सभ अपने-ले हाँइ-हाँइ करैए। जेना

सबहक पेटमे मूस कुदैत होइ। आखिर सभ उजि-माइल किए करैए। कनी आगू बढ़ि देखलौं तँ दोकनदार डण्डी धेने बेसाह जोखैमे एते तवाह रहए जे पाइयोक हिसाब नै जोड़ि होइ। तैठाम बुधि-विवेकक हिसाब तँ आरो भारी अछि। वेचारा दोकनदारे की करत। ओकरे चावस्सी दी जे नगद कि उधार गामक पैत बँचौने अछि। तहीकाल एक दस-बारह बर्खक बच्चिया दोकनदारकेँ कहलक-

"हमरा राइतो ने भानस भेल, तँए पहिने हमरा दू किलो आँटा दिअ।"

बच्चियाक बात सुनि मन सहैम गेल। हाइ-रे मनुख! दस-बाहर बर्खक बच्चियाक जँ पेट जरत तँ ओ केहेन जननी बनत। मुदा उपाय? सहदेव बाबा आगू दिस घुमल ठाढ़ रहैथ, मुदा मुँहमे बोल नै रहैन आकि पेटमे घुरिया रहल रहैन से तँ ओ जानैथ, मुदा हमरा बुझि पड़ल जे भरिसक बेसौहुआ सबहक संग बाबा अपन बेथा ने तँ विलैह रहला अछि। अनका पेटक आगिक संग अपनो पेटक आगि जनु बाँटि-विलैह रहला अछि।

पाँच किलो चाउर आ सात किलो गहुमक चिक्कस कीनि दुनू झोरा दुनू हाथमे नेने सहदेव बाबा पाछू दिस घुमला कि हमरापर नजैर पड़लैन।

नजैर मिलते दुनू हाथ जोड़ि बजलौं-

"बाबा गोर लगै छी।"

मुदा हुनका मुहसँ किछु ने निकललैन। आगू बढ़ैत निच्चाँ एला। खसल चेहरा देख मन कलैप गेल। ताबे लग आबि गेल छला। ओना, बाबामे ई आदत छैन जे चिन्हारकेँ देखते किछु-ने-किछु पुछि दइ छथिन। एहेन मान-रोख मनमे छैन्हे नइ जे जे टोकत तेकरे टोकबै। स्पष्ट विचार छैन जे झगड़ा ने दन तँ चुन-तमाकुल किए बन्न। भाय, झगड़े जँ अछि तँ झगड़ा किए अछि, ओ तँ जे जीबैए, सहए करत। ने पैछला देखए औत

आने ऐगला भोगए औत। तरवन तँ भेल जे झगड़ा कथीक। जँ वैचारिक झगड़ा रहत तँ ओ विचारि कऽ विचार करए पड़त, तहिना जँ खेत-पथारक रहत तँ ओकरो अपन सूत्र छै, तहिना जँ अधिकारक अछि तइले संविधानो अछि आ संविधान बनौनिहारो। तरवन कोन कारण शेष रहल जइले समाजमे विग्रह बनल रहत।

मनमे भेल जे केना बाबाकेँ कहबैन जे अहींसँ भेँट करए जा रहल छी। एक तँ अपने बेसौहुआ छैथ तैपर भार किए देबैन। मुदा मनक जे उमकी रहए ओ तँ रहबे करए, जे विचार विनिमय भेनहि हटत...।

कहलयैन-

“बाबा अहीं घर दिस जाएब।”

मनमे भेल जे से कहलासँ एते मनमे हेबे करतैन जे रस्ते-रस्ते कुशलो-छेम कऽ लेब आ जइ काजे जाइए से काजो...। ओना, अपना तँ बुझले अछि जे जरवन कोनो विचारक गुण बाबा पकैड़ लइ छैथ तरवन सिरा-भट्ठा बिसैर जाइ छैथ। ओना, भट्ठामे गुनक कोन खगता छै, ओ तँ अनेरे पानिक वेगमे भँसियाइत चलत, मुदा सिरा दिस चढ़ने तँ धारक वेग बुझिये पड़ै छइ। गुणियो तँ गुणीए छी, जरवने मनमे गुणकेँ रोपि लेत अनेरे ने गुणीसँ गुनी भऽ जाएत। घर दिस विदा होइते कहलयैन-

“बाबा अहाँक दुनू हाथ बरदाएल अछि चलैमे बाधा हएत।”

ओना, बाबाक मनमे जे रहल होइन मुदा बजला-

“कोनो बेसी भारी कहाँ अछि, सात किलो आँटा आ पाँच किलो चाउर अछि।”

बाबाक बात सुनि ओना, बहुत आश्चर्य नहियेँ भेल, किएक तँ अपने सेहो ओही रमा-कठोलामे छी। मुदा जबरदस आश्चर्य ई भेल जे जे बाबा अपने सभ दिन अन्न बेचै छैथ, आइ ओ कीननिहार भऽ गेल छैथ, मुदा जिनगीसँ तेते प्रेम छैन, तँए दुरवे-कि-सुरवे जीबए चाहिते छैथ। रस्ता

दुआरे आकि की, अपन घर लग तक गामेक चर्च बाबा करैत रहला अपन बात किछु ने बजला। घर लग तक अपन बात किछु ने सुनि भेल जे समय तँ रीब-रीबेमे चलि गेल। बाबा अपन कहाँ किछु कहलैन। जे सोचि आएल छेलौं सहए हेराएल रहि गेल।

मुदा सुतरल, सुतरल ई जे घर लग अबिते बाबा बजला-

“बहु दिनसँ भेँट नइ भेल छेलह दरबजेपर चलह किछु आरो गप करैक अछि। अखैन कि कोनो काज-परोजन अछि, भने किछु समैयो कटि जाएत। समय तँ काजे काटि लेलक, मुदा अपनो तँ ओकरा काटक अछिए। जाबे से नै हएत, ताबे जीब केना पाएब।”

आँगनमे झोरा रखि सहदेव बाबा दरबज्जापर एला। ताबे चाहो आबि गेल। दुनू गोरे चाह पीबए लगलौं। मनमे हुअए जे बाबाकेँ किछु पुछिऐन, मुदा बाबा अपने बजैमे ओझरा गेल रहैथ, जइसँ अपन घरक बाते हेरा जाइन।

मुदा गर लगल। बजला-

“बौआ, गामक दूरदिन आबि गेल।”

बाजि कऽ कनीकाल चुप भऽ फेर बजला-

“जखन गामेक दूरदिन आबि गेल, तखन गामक लोक बँचि केना सकैए।”

गामक की दूर्दिन आबि गेल से बुझिये ने पेलौं। मुदा जँ कोनो विचारक कोनो शब्द भरियाएल रहत तँ ओकरा हल केला पछाइते ने आगू नीक होइ छइ।

पुछलयैन-

“बाबा की दुरदिन?”

शब्दकेँ महियबैत बजला- “दूरदिनमे दू शब्द छै, दूर आ दिन।

दूरदिनक एक माने भेल भविसक दिन, आगूक दिन आ दोसर माने दुतकारैबला दिन सेहो भेल।”

बाजि सहदेव बाबा जेना किछु सुनैक जिज्ञासामे चुप भऽ गेला। मनमे हुअए जे केना काटलपर नोन छीटब। माने जे एक तँ सहदेव बाबाक दिन एते घटि गेलैन जे बेचनिहार से कीननिहार भऽ गेला तैपर अन-पानिक चर्च करब नीक थोड़े हएत। मुदा ईहो हुअए जे ई तँ जिनगीक सत् छी, एकरा छोड़बो नीक नहियेँ...।

अही अग-दिगमे मन पड़ल रहल। मुदा जेना अपने मनमे उचरलैन। बजला-

“अपन गाम नाश भऽ गेल।”

‘नाश भऽ गेल’ तैपर नजरिये ने पहुँच सकल। किसान लेल पानिक की महत अछि आ ओकर दुरूपयोग भेने केते पैघ खतरा सेहो छइ। तइ दिस नजरिये ने गेल। मुदा एते तँ आश्चर्य लगबे कएल जे गामे नाश भऽ गेल, की नाश भेल? पुछलयैन-

“की नाश भेल?”

बजला-

“गाम देने जे कोसी नहरक शाखा अछि, ओ भारी नोकसानदेह बनि गेल अछि। जहिया गाममे नहरक खुनाइक नाओं लेल गेल तहिया भरि दिन देखते-सुनिते, अपन भूत-वर्तमान आ भविसक विचार करैमे दिन बित गेल, तेते मनक आशाक श्रृंग उपकने खुशीसँ हृदए नाचि गेल रहए जे...। मन भेल रहए अपने नै गामोक सुदिन आबि रहल अछि मुदा सुदिन केना कुदिन भऽ गेल।”

बाजि कऽ बाबा जेना ठमैक गेला। बकार बन्न भऽ गेलैन। मुदा अपन जिज्ञासा एते बढ़ि गेल जे अनेरे मुहसँ निकैल गेल-

“जँ सुदिन कुदिन बनि सकैए तँ कुदिनो तँ सुदिन बनियेँ सकैए।”

सहदेव बाबा बजला-

“हँ निसचित बनि सकैए। अपने गामक जे चुहचुही अछि ओ अहिना रहितए। देखते छहक जे नहैरक एहेन बेवस्था अछि जे धानो दहा जाइए आ गहुमो दहा गेल। ऐबेर की कोनो धारक बाढ़ि आएल कि नहरेक पानिसँ दहार भेल!”

कहलयैन-

“हँ से तँ भेल।”

हमरा बातमे बाबाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा जेना हृदैक धड़कन तेज भेलैन। मुँहक सुरखीमे एकाएक खूनक लाली पसरए लगलैन। बिहुसैत बजला-

“बौआ, जाके मतिभ्रम होइ खगेसा, सो कह पच्छिम उगे दिनेशा।”

❑ साभार : उकड़ू समय

अवाक

दुनियाँक एक-एक मनुखकेँ जहिना अपन देश-कोस आ अपन भूमि-मातृभूमिक प्रति ममता सिनेह रहै छै तहिना हमरो जगल। कोनो अधला वृत्ति तँ छीहो नहियेँ जे बेसी तर्क-वितर्क आकि विचार-विमर्श करैक परियोजन पड़ितए।

देह-दशासँ दुब्बर रहितो अपन मातृभूमिक गरिमा बढ़बैले समाजसँ अनुचित विचारो आ काजो मेटबैक संकल्प मनमे रोपलौं। अनुचितक विरोधमे बाजब शुरू केलौं, मुदा बाजबे धरि रहलौं। जइसँ कोनो भीड़-भड़क्कासँ कहियो भेँट नै भेल। मनो आ मनक विचारो तइसँ कनी-मनी सकता गेल। मन सकताइते अनुचित काज रोकैक उत्साह जगल। उत्साहक दोसरो कारण भेल, ओ भेल जे हमरा सन-सन बहुत गोरे हमरे संग संकल्प मनमे रोपलक जइसँ एक तरहक विचारक जनम भेल। जहिना आमक आँठीमे पीपही जनैमते दू दलिया बनि आँठीक गुद्दा रगड़ पाबि पीपहीक अवाज दिअ लगै छै तहिना मन पिपिऐ लगल।

गाममे एकटा घटना भेल। घटना कि भेल जे रामलालक बकरी चोरि भऽ गेल। ओना, मालो-जाल आ बकरियो-छकरीक चोरियो होइए आ अपनो डोरी टुटने वा खुजने सेहो खुट्टा छोड़ि हटि जाइए। खुट्टा सून देखने ताक-हेर मलकार करिते अछि। मुदा होइ दुनू छइ। चोरियो होइ छै

आ खुजबो करै छइ। खुजलाहा भेट जाइ छै मुदा चोरौलहा चल जाइ छइ।

भोर होइते रामलाल बकरी टोहियबऽ लगल। परिवारक सभ तूर वाड़ी-झाड़ी, अड़ोसी-पड़ोसीक घर आ खेत-खरिहाँनमे ताकए लगल। सौंसे गाम बकरी चोरिक गन्ध पसैर गेल। जेतए-तेतए माने चौक-चौराहासँ लऽ कऽ दुआर-दरबज्जा, इनार-पोखैरक घाट धरिमे एक्के चर्च जे 'रामलालक बकरी चोरि भऽ गेल।'

तही बीच दोसरो गन्ध निकलल। ओ निकलल जे किछु रतिगर दबि कऽ गरम-मसालाक गन्ध पसरल छल। भरिसक केतौ मौस रनहाइए! एती रातिमे! मुदा भाइयो तँ सकिते छै जे कियो दरभंगा-मधुबनीसँ राति दबा मौस-तौंस अनने हेता। पोखैरक पानिक हिलकोर जकाँ गामोमे हिलकोर उठल, मुदा केतौ असथिर तँ केतौ तेज गति आएल। रौतका मौसक सुगन्ध मुदा बकरी चोरिक भाँज खोललक। भाँज खुजिते चोर-मोट धड़ा गेल।

समाज तँ समाज छिऐ, ऐठाम तँ गोली-बन्दूकक ओगरवाहि नै छै, ऐठाम तँ समाजक दसटा लोके अपन उचित-अनुचितक विचार करता। ई तँ नै जे फल्लाँ-गाम चोरक छी आ चिल्लाँ-गाम नीक लोकक। गाममे नीको लोक अछि आ चोरो अछि। सतो बजनिहार अछि झूठो बजनिहार तँ ऐछे, इमानदारो अछि आ बेइमानो अछि तहिना सूदिखोरो अछि आ सूदि देनिहारो तँ ऐछे। मुदा गाम-समाज तँ ओहन जगहक इजोत छी जैठाम ऐनाक जरूरते ने छै, हाथक कंग भूमि जकाँ।

बकरी चोरौनिहार अपन पूर्व संस्कारक परिचय दैत ताल ठोकि अपन पैघ-पैघ वृत्तिक चर्च बरखाइन देलक। वातावरण एहेन भऽ गेल जे बकरियेक तराजूपर गाम तौलाइक परिस्थिति बनि गेल। पनचैतीक समय बनल।

पनचैतीमे समाजक एते लोकक जुटान भरिसक कोनो पनचैतीमे कहियो नै भेल छल। कोनो काजक एकमुहरी विचार काजकेँ हल्लुक बनबै छै, से नै भेल। विचारधाराक धारमे चोरि फँसि गेल। गाम दू फाँक भऽ गेल! मारि-पीट भऽ गेल! मारि-पीट भेने मोकदमाक आगमन भेल। लोअर प्राइमरीक चटिया जकाँ काँखमे झोरा टाँगि मधुबनी कचहरीक स्कूलमे पचीस-तीस गोरे नाओं लिखौलक।

बीस बर्खक पछाइत जखन मोकदमा मरान दिस बढ़ल तइ समय एकटा अनुकूलतो भेल। भेल ई जे केसक संख्या बेसी भेने केसेक समय निर्धारित भेल जे 'अमुक केस जँ दस बर्खसँ न्यायालयमे अछि तँ ओकरा खारिज कएल जाए।'

मनुखे जकाँ मरानपर बेसी तरद्दूतक जरूरी होइते छै, बीमारीसँ सराध धरि। जेते गोरे मोकदमाक मुद्दालह रही अपनामे विचार केलौं जे बीस बर्खसँ गाम-सँ-मधुबनी आ मधुबनी-सँ-गाम रेङ्बे केलौं, समाज होइक नाते कम तँ नहियेँ भेल। तँए जेकर बकरी चोरि भेल ओकरो खर्चमे मदैत करैले एकबेर कहियौ। संयोग एहेन जे एकतरफा केस भेल रहै तँए बकरीबला नै फँसल छल। जहिना पहिने अवाद छल तहिना घटनाक पछाइतो रहल। बिनु पानिक मनुख पीछड़ाह तँ होइते अछि। रामलालो ओहने पीछड़ाह। जेते जगह, जेते लोक, तेते रंगक चालि आ तेते रंगक बोल तँ सभ दिनका रहबे करए, आरो बेसी चलती आबि गेलइ। चलतीक कारण दू-दिसिया भेल। दू-दिसिया ई जे जेकर बकरी नै रहै तेकरे मधुबनीक दौड़ो-बरहा, होटलोक खर्च आ गाड़ियो भाड़ासँ लऽ कऽ समय तकक खर्च हुअ लगलै। जइसँ मनमे दिल्लीक लड़ू जकाँ हेबे करै जे जेहने खेने तेहने बिनु खेने। तँए अपन नोकसानीपर सोच-अपसोच हेबे करइ। मनमे बोझ सेहो बनियेँ गेल रहइ। बोझ बनैक कारण ईहो भेल जे जँ बकरीबला कमसँ कम पीठपोहुओ रहैत तँ किछु असो रहितए, मुदा सेहो नै! गाममे सभठाम बैसै-उठैक चलतियो बेसी ओकरे

भऽ गेल अछि। तैसंग दोसरो कारण भेल, ओ ई भेल जे एहेन लोकक ठेकाने कोन? हो-न-हो कहीं गोटे विरोधी एहेन संग देनिहार भऽ गेल जे अपने पूजी लगा तमाशा ने ठाढ़ कऽ दिअए। तमाशा ई जे कोट-कचहरीक कारोबार सेहो ठिकौतीएपर चलए लगल अछि। सभ काजक ठिकौती! एते तक कि जजमेंटो ठिकौतीए होइए। तँए शंका हएब सोभाविके। भरि दिन आँखियो आ कानो, देखो कऽ आ सुनियोँ कऽ तोपाएले रहैए जे फल्लाँ पोखैरमे माछक जोती भेल अछि, केदैन दबाइ रातिमे धऽ देलकै। कियो देखलकै कहाँ! तहिना फल्लाँ गाछमे आम तोड़ि लेलकै, फल्लाँक सजमनिक लत्तीए काटि देलकै जे विकसित खेतीक प्रक्रियाक अंग छी, अंग ई जे जइ खेतमे अन्नक खेती होइए ओइमे जँ तरकारी खेती हुअए तँ अन्नसँ चारि गुणा उपज जरूर बढ़त! गामक उत्पादन- उपजा-वाड़ी- गामकेँ आगू आ पाछू घुसकैक मिथिलाक चिन्तनधाराक प्रमुख थर्मामीटर छी। जे धरती अन्न, फल, फूल, भोजन, जीवनकेँ एक सूत्रमे बान्हि देव तुल्य जिनगीक अनुसन्धान कऽ चुकल अछि!

पाँच गोरे जे सभ केसक मुद्दालह रही, रामलाल ऐठाम गेलौं। रामलालक चलती खाली भाषणेटा मे नै खेत-बोनिहारसँ छोटका वेपारी बनि गेल। गामो आ गामक चारू भाग छोटका-बड़का हाट लगिते छइ। एम्हुरका ओमहर लऽ जा बेचि लइए आ ओमहर जे सस्ता रहै छै ओ कीनि लइए। साइकिल रखने अछि एक मनक बोझाक कारोबारी बनि गेल अछि। पहुँचते देखलिऐ जे करीब प्रतिदिन तीन साए लाभक कारोबार करैए। तँए मुँहक मुस्की दैत कहलिऐ–

“रामलाल, गाममे केकरो चलती आएल तँ तोरा सभसँ बेसी एलह, एकेटा बकरी गेने जिनगी बदैल गेलह।”

जहिना हमर मुस्की रहए तइसँ डेढ़िया-दोबर मुस्कान भरैत रामलाल बाजल–

"चलती तँ सौंसे गामेकेँ एलै आकि हमरेटा आएल। हमरे पाबि केते लोक मधुबनी देखलक। नै तँ, बाप-दादा देखबे ने केलकै आ बेटा-पोता ओकील जकाँ कानून झाड़ैए!"

ओही दिन मुस्की आ मुस्कानकेँ देखलौं। रामलालक मुस्कान अपन जिनगीक लाली परहक, मुदा ओ लालीक जड़ि की? से के देखत जेकरा ले चोरि करी सएह कहए चोरा!

कहलिऐ–

"रामलाल, तोहरबला केस आब मरानपर आबि गेल अछि। बीस बर्खसँ तँ केसमे फँसल सोल्हो गोरे मधुबनी रेङ्बे केलौं आ खरचो केलौं। अन्तिम तोर केसक छी, विधि-बेवहारमे खर्च होइते छै, किछु उचितो किछु अनुचितो। तँए ऐगला खर्च तूँ दऽ दहक।"

मुस्कान भरल मुहसँ रामलाल बाजल–

"हमहीं तोरा सभकेँ पनचैतीमे मारि करए कहने रहियऽ जे केसक खर्चा मंगै छह?"

रामलालक गप सुनि अवाक भऽ गेलौं।

ओना, मरैसँ पहिने लोक अङ्गेज नेने रहैए जे मुइलोपर अस्सी मनक भार पड़बे करत तइले चिन्ता केने चीता मानत। जे बीस बर्ख लड़ल ओकरा बुते फरिछौल नै हेतइ। मुदा..?

❑ साभार : अप्पन-बीरान

कलंक : 1

पैंतीस साल हाइ स्कूलमे शिक्षकक नोकरी केला पछाइत सेवा निवृत्त भऽ जीवन लाल काका अपन गाम जगरनाथपुर आबि गेला। ओना, तीन भाँइक भैयारी छैन मुदा छोट दुनू भाँइकेँ अखन अवस्था रहने नोकरी छैन्हे। गाममे नइ रहने खेतो-पथार, कलमो-गाछी आ घरो-दुआर अनभुआर जकाँ भइये गेल छेलैन जे गौंओं बुझै छैन, तँए अपन परिवार आकि अपन सम्पैतमे कोनो बाधा बीचमे नहियेँ भेलैन।

हजार बीघा रकबाक गाम जगरनाथपुर। जइमे बारहो वर्ण बसल अछि जइसँ परोपट्टामे जगरनाथपुर सम्पन्न गाम मानल जाइते अछि, जे आनो गामबला मानिते अछि आ गौंओं अपन गामक समृद्धताक सुखो तँ भोगिते छैथ। सुख ई जे जिनगीक अधिकांश जरूरतक काज गामेमे पुरि जाइ छैन। माने ई जे दैनिक जिनगीक जरूरतक पूर्ति जँ गाममे हुअए तँ यएह ने भेल समृद्धता। ओना, लोकोक जिनगी समटल ऐछे, तेकर कारण अछि जे बाहरी वातावरणक प्रवेश आन गाम जकाँ जगरनाथपुरमे नहियेँ भेल अछि।

जहिना पसारी– माने नौआ, धोबि, बढ़ही इत्यादि अछि जेकर अपन-अपन बेवसाय समाजमे छइ, तहिना गामक किसानो आ बोनिहारो तँ ऐछे। बेवसायिक जाति अपन-अपन बेवसाय करिते छैथ। ओना,

साएसँ ऊपर किसान परिवार छैथ, मुदा सभकेँ एक-रंग जमीनो-जत्था नहियेँ छैन। पचासो बीघाबला किसान छैथ आ तीनियोँ बीघाबला छैथ। तहिना बोनिहारोक अछि। किछु एहनो अछि जेकर घरो अनके जमीन वा सरकारी जमीनमे छै आ किछु एहनो अछि जेकरा अपन घर-घराड़ी अछि आ किछु एहनो अछि जेकरा अपन दस-पाँच कट्ठा खेतो छै आ किछु एहनो अछि जेकरा अपना खेत पथार तँ नइ छै मुदा दस-पाँच कट्ठा बर-बटाँइ सेहो करैए।

गामक जमीन सेहो एक रंगाहे अछि। एक रंगाह भेल जे ने बेसी उपरारि जमीन अछि आ ने बेसी चौरी अछि। ओना, चौरीक तँ छुतियो नइ अछि मुदा डेढ़-दू साए बीघा उपरारि अछि जइमे लोक घर-घराड़ीसँ लऽ कऽ गाछी-कलम लगौने छैथ। ..जहिना सम्पन्न गाछी-कलम अछि तहिना बँसवाड़ि सेहो ऐछे। उस्सर जमीनक छुतियो गाममे नहियेँ अछि। चालीस-बियालीसटा पोखैर सेहो अछि जे करीब साए बीघा जमीनमे अछि। पोखैरक महारपर बेसी लोकक बास छइ।

ओना, गाम बरह-वर्णा छी, मुदा कोनो जाति एहेन नहि छैथ, जे जमीनेमे आकि जनसंख्येमे दोसर-तेसरसँ बेसी अगुआएल छैथ। चालीस-पचास बीघा जमीनबला पाँच गोरे छैथ जे पाँच जातिक छैथ, जहिना साए घरसँ ऊपर जातिबला चारि छैथ, जे चारि जातिमे छैथ। नोकरी-चाकरी चाहे सरकारी हौउ आकि गैरसरकारी, कम लोक करै छैथ। तहूमे ओहन लोक करै छैथ जे समंगर छैथ। सोभाविके छै जे जखन गुजर करै-जोकर अपने साधन रहत तखन लोक नोकरीए किए करत। ..ई धारणा पढ़लो-लिखल लोकमे छैन तँए ओहो सभ अपन गिरहस्तीकेँ अगुआ कियो माछ उपजबै छैथ, तँ कियो खेतीक संग गाइयो-महींस पोसै छैथ। सबहक (माने पढ़ल-लिखल) मनमे धारणा बनले छैन जे सरकारी नोकरीमे ओतबे दरमाहा भेटैए जइसँ पदक हिसाबसँ माने स्तरक हिसाबसँ जिनगी बना जीब सकै छी। तहिना बोनिहारोक धारणा बनल

अछि जे जखन मेहनैते केने केतौ गुजर करब आ जँ गामेमे बारहो मास काज भेटत तखन अनेरे गाम-समाज छोड़ि आन गाम-समाजमे किए जाएब। किए गामक नाक कटेबै जे फल्लाँ गामक भिखमंगा भीख मांगए आएल अछि। की ई कहब झूठ अछि जे 'अपन घरक अदहो पेट खेनाइ आन घरक भरि पेटसँ नीक होइए।' तहूमे समाज अपन खगताक पूर्ति लेल केतेको पाबैनक उपास सेहो कऽ कऽ अपन साल पुराइए लइ छैथ। ओना, अपना ऐठाम किसानी जिनगी अपन समुचित रूप नइ पौने ठूठ भऽ ठूठिया जरूर गेल अछि, मुदा से जगरनाथपुरमे नइ अछि। सबहक मनक विचार एक-रंगाहे छैन जे जखन तीन साए पैंसैठो दिन माने सालो भरि मनुखो आ पशुओकेँ भोजनक संग चैनसँ रहैले घरोक जरूरत होइ छइ, तेतए तँ तीन साए पैंसैठो दिनक प्रबन्ध सेहो ने करए पड़त। तहूमे हम सभ ओइ धरतीक वासी छी जैठामक ऋृषि-मुनिक परम्परा रहल अछि जे आजुक खगताक पूर्तिसँ जँ एको मुट्ठी सिदहाक चाउर काल्हि-ले रखै छी तँ अहाँ समाजमे चोर भेलिऐ। ओना, ऋृषि-मुनिक जिनगी, किसानी जिनगीसँ ऊपर अछि मुदा विचारमे इमान नइ छैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहूमे जनक सन-सन महापुरुष जे हरबाहि करैत किसानी जिनगी धड़ैत जोगी-संयासी छला।

जगरनाथपुरक बोनिहारोक बीच धारणा एहेन बनले अछि जे- 'लूटि लाउ कुटि खाउ, भिनसर भने फेर जाउ।' ..जैठाम श्रमक संग जिनगी सटि कऽ चलि रहल अछि तैठाम श्रम-साध्यमे भेद केना उपस्थित हएत। हाथसँ जेते काज भऽ सकैए ओ तँ हाथक काज भेल, जेकरा करैले सभकेँ दू-दूटा छइहे। अही दुनू हाथक भरोसे ने बीत भरिक पेट अछि...।

गाम एला पछाइत जीवन लाल काका एक-पनरहिया अपना रहै-जोकर घर-दुआर बनबैमे लगौलैन। पनरह दिनक पछाइत रहैक घर देख नमहर साँस छोड़ैत मने-मन विचारलैन जे आइ धरिक जे समाज छल आकि उपैतिक जिनगी छल ओ दुनू हेरा गेल। जखन जिनगीमे दुनू हेरा

गेल, तखन आगूक जिनगी-ले रहल की जे अपनाकेँ ओहन बुझब? ..आइ धरि जीवन लाल काकाकेँ एहेन विचार मनमे कहियो ने उठल छेलैन।

जहिना तीन भाँइक भैयारीमे दुनू छोट भाए अपन-अपन परिवारक संग बाहरे छैन, तहिना दुनू बेटो अपन-अपन परिवारक संग सेहो रहिते छैन। असगरे दुनू परानी गाम आबि शेष जिनगी बितबैक विचार कैये नेने छैथ। ओना, जखन मास दिन समय सेवा निवृत्ति होइमे जीवन लाल काकाकेँ रहलैन तखन चाह पिबै काल पत्नीकेँ कहने रहथिन»

“ऐ बेरक अदरा पाबैनक खीरो आ गुलाब खास आमो निचेनसँ गामेमे खाएब।”

ओना, अखन धरिक बाहरक अभ्यस्त जिनगी तँए अनुराधाकेँ ओते मनमे नइ गड़लैन जेते गड़क चाहिऐन। मुदा गामक नाओं सुनि बेटा-पुतोहु दिस नजैर तँ गेबे केलैन। ..बजली»

“आब चारिम-पनमे दुनू परानी ऐलौं, जाबे हूबा छल ताबे ने कमाइयोक आ भोगैयोक मनसूबा छल, मुदा ऐ अवस्थामे बिनु सहाराक जीवियो तँ नहियेँ सकै छी।”

पत्नीक थरथराइत विचार सुनि जीवन लाल काका बजला»

“हमरा-ले कोनो हर्ष-विस्मय नइ अछि, दूटा बेटा अछि, जखन गरमी मास रहतै तँ राँचीबला ऐठाम रहब आ आन छह मास दोसर बेटा लग।”

ओना, जीवन लाल काका लहका बंशी जकाँ पत्नीक आगू अपन विचारकेँ रखलखिन मुदा अनुराधाकेँ घिड़नीबला बंशी जकाँ विचार मनमे घुरिया लगलैन। विचार ई घुरिया लगलैन जे ‘साँइक राज अपन राज, बेटाक राज मुँह तक्की।’ तहूमे तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे कोन पुतोहु सासुकेँ सासु बुझैए। जहिना मनमे सोचै छी जे निचेनसँ बेटा-पुतोहु लग रहब तहिना तँ तेकर उल्टो भऽ सकैए। उल्टा होइक कारण अछि जे

कियो वंशगत परिवारक सम्पैतिक संग बेटा-पुतोहुक बीच जिनगी बसर करै छैथ, तँ कियो घरसँ बाहर नोकरी-चाकरी करैत वा कोनो बेवसाइए करैत, तैबीच रहब दुनू एक केना भऽ हएत? तँए किछु-ने-किछु ओकर असर तँ पड़बे करत। माने ई जे वंशगत परिवारमे वंशगत आचार-विचार आ बेवहार वंशक बाट पकैड़ चलैए जइसँ मन-मनान्तरक कोनो कारणे ने रहैए मुदा नव जगहपर समाजिक नव परिवेश तँ रहिते अछि जइसँ जिनगीमे किछु-ने-किछु मन-मनान्तरमे भेद आबिए जाइए। मानि लिअ जे कियो अपन भारतीय साहित्यसँ एम.ए. केने छैथ, जिनका ऊपर अपन भारतक जीवन दर्शनक प्रभाव छैन, माने ई जे राम, कृष्णक संग सीता, राधा, सावित्रीक जिनगीक अनुकरण करबाक ज्ञान छैन आ कियो फ्रेंच साहित्यसँ एम.ए. केने छैथ जिनका ऊपर शारीरिक खुला जिनगीक प्रभाव छैन, तैठाम तँ ज्ञान वा डिग्रीक एक सीमा रहितो विचार आ बेवहारमे अन्तर हेबे करत। ओना, ई अन्तर अपन समाजक बीच परिवेश पाबि सेहो भइये रहल अछि। परिवेश ई जे कियो किसानी जिनगी धारण केने छैथ आ कियो नोकरीक, दुनूक बीच काजक माने उपार्जनक लेल साध्यक अन्तर तँ आबिए जाइत अछि, जे मनुखक जिनगीक गठनमे किछु-ने-किछु जीवन-गाँठ तँ बनाइए दैत अछि, जइसँ किछु-ने-किछु दूरी बनियेँ जाइत अछि। ओना, अनुराधाक मनमे एहेन विचार नइ उठल छेलैन, हुनका मनमे ई उठल छेलैन जे अखन धरि अपना हाथे-मुट्ठीक बले जीबैत एलौं, जइसँ अखन धरिक जिनगीक रूप बनल आबि रहल अछि, ओ जखने बेटा-पुतोहुक परिवारमे रहब, जे परिवार बेटा-पुतोहुक हाथे-मुट्ठीए चलि रहल अछि, तैठाम अँटावेशमे किछु-ने-किछु विघटन तँ हेबे करत, जखने विघटन हएत तखने ने ओइमे भेद औतइ। जखने भेद औतै तखने ने मन-भेद जगत। जखने मन-भेद जगतै तखने ने रक्का-टोकी हएत, जखने रक्का-टोकीक जन्म परिवारमे भेल तखने परिवारक रूपमे विश्रृंखलता एबे करत जइसँ कहा-सुनी होइत-होइत झगड़ा-झाँटी हएत

जे आब जिनगी भरि लधल रहि जाएत! तेतबे नहि, जखने मनमे झगड़ा-झाँटीक रूप बनल रहत आ देहमे केहनो चिक्कने वस्त्र वा पेटमे भोजन रहबे करत तइसँ चेन मन थोड़े रहत। आ जखने मनमे चेन नइ रहत तखने ओ निचेनीकेँ बास थोड़े हुअए देत। ..मनमे उठिते अनुराधाक मन औना गेलैन। आगूक कोनो निचेनी जिनगीक बास नहि देख भकमोड़पर मन भकुअए लगलैन।

भकुआइत अनुराधाक मन ठमकल गाछमे जहिना कोनो मुड़ीमे कलशक नव टुसाक आगमन होइते गाछकेँ नव जिनगी भेटैक आशा जगै छै तहिना भेलैन। भेलैन ई जे दुनू परानीक उमेर साइठ-बासैठ बर्खक भेल अछि, अखन तकक जिनगीक जे अभ्यास बनल आबि रहल अछि ओकरा उमेर की करतै। शर्कसमे देखै छिऐ जे लोक हाथीकेँ उठा लइए ओहो तँ ओकरा अभ्यासेसँ ने भेल रहै छै जे जखन हाथीक बच्चा छल ओकरो महींसिक पड़ू जकाँ दुनू हाथे उठौल जाइए, तहिना ने हाथियोकेँ होइए। बच्चामे दुनूक अन्तरे की रहैए। कनी-मनी रहैए। मुदा उठौनिहार तँ ओइसँ बीस रहबे करैए। तखन जे जिनगी जीबैत आबि रहल छी ओ भारीए केना भेल जे केकरो ऐठाम जा कऽ रहब। ओह! मनमे अनेरे जिनगीक सोग पकड़ैए..! अनेरे बुझै छी जे जिनगी भारी अछि तँए केकरो सहारामे रहब जरूरी अछि। जखन बाप-पुरखाक देल घर-घराड़ीक संग वाड़ी-फुलवाड़ी सेहो ऐछे–माने गाछी-कलम, तखन जे अनेरे कोनो बेटा लगमे रहि कऽ मरब आ बिजलीसँ जरौल जाएब, जइमे ने एको मुट्ठी छाउर हएत जे गयामे पिण्ड पड़त, आ ने एक्को टुकड़ी हड्डीए बँचत जे गंगा लाभ हएत..?

अनुराधाक घुरियाइत मनमे एकटा विचार जगलैन, विचार जगलैन जे भगवान रामक संग सती सावित्री सीता केना राज-पाट छोड़ि बोने-बोन चौदह बर्ख धरि जिनगी जीलैन! जखन साठि-बासैठ बर्खक उमेर भइये गेल अछि, सत्तैर-पचहत्तैर बर्खमे सभ मरैए, हमहूँ दुनू परानी मरब,

तइले मनहानि करब नीक नहि।

..अनुराधा बजली»

“जहिना सभ दिन दुनू गोरे अपन मनक मन्दिर बना जिनगी जीलौं तहिना आगूओ जीब। बड़-बेसी हएत तँ एतबे ने हएत जे दरमाहा अधिया जाएत, मुदा ईहो तँ हेबे करत जे जिनगी भरि जे कमा-कमा तोरा गाड़लौं, ओहो तोरा तँ भोटबे करत। तैसंग बाप-पुरखाक ओहन सम्पैत ऐछे जइसँ केते पुरखाक जिनगी चलल छैन। तँए अनेरे किए केतौ आनठाम जा कऽ रहब, अपने गाममे रहब, आब केतौ ने जाएब।”

पत्नीक विचार सुनि जीवन लाल कक्काक मनमे सेहो अपन पैंतीस सालसँ पूर्वक स्मृति मानस पटलपर उतैर धड़-धड़ा कऽ घेर लेलकैन। घेरते मनमे माता-पिताक संग अपन विद्यालय सेहो उतैर एलैन। वएह गाम कहियौ आकि मातृभूमि जैठामक विद्यालयमे पढ़ि अपना-केँ सक्षम शिक्षक बनि पैंतीस बर्ख धरि विद्या दान केलौं। कहब जे दरमाहा तरे ने विद्या बेचलौं। बेचलौं कहाँ! जैठाम रहलिऐ तैठामक अन-पानि खेलिऐ-पीलिऐ। ने कहियो केकरो ट्यूशन पढ़ा फीस लेलिऐ आ ने परीक्षामे नम्बर घुसका-फुसका एको पाइ लेलिऐ आ ने केकरो ऐठाम रहि खेलिऐ-पीलिऐ। अपन डेरा बना, अपने परिवार जकाँ जीबो केलिऐ आ बाल-बच्चाकेँ पढ़ेबो-लिखेबो केलिऐ...।

पत्नीक विचारकेँ शिरोधार्य करैत जीवन लाल काका बजला»

“मन कि दुनू गोरेक बाँटल अछि। जएह मन अहाँक अछि, सएह ने अपनो अछि।”

सिनेह भरल पतिक विचार सुनि, जहिना बिढ़नी वा मधुमाछी अपन छत्तासँ निकैल एके सुड़कुनियाँमे ओतै जा कऽ अँटकैए जेतए ओ अपन बास-भूमि बुझि अपन चसनीक चास चलियबैए, तहिना अनुराधा जिनगीक एके सुड़कुनियाँमे पैंतालीस बर्ख पूर्बक बिऔहती मड़बापर

पहुँच गेली। बजली»

"मन अछि की नइ जे पहिल दिन केना चितवनक चितचोर जकाँ दुनू गोरेक चित्त मिलल रहए आ अही मुहसँ जिनगीक संगी बनबक शपथ खेने रही।"

पत्नीक मधुआएल विचार सुनि जीवन लाल कक्काक मन ठहकलैन, ठहकलैन ई जे संगीक संगपनाक बात कहि मनमे मोहैन चलबए चाहि रहली अछि, संगपना तँ तेहेन निमाहली अछि जे मने कहैत हेतैन आ अपनो मन देखैए। कहू जे ई कोन बड़ भारी बात अछि जे ऐ चिनमय संसारक सभ चिनमय छी तखन जे सालमे पचीसो दिन उपासक बहन्ने भूखे टटौलैन से केते नीक भेल। भाय! जँ बनौनिहार अपन पेट साधि सकैए तँ खेनिहार तँ पानियोँ पीब कऽ चौबीस घन्टाकेँ के कहए जे चौबीसो दिन तक जीब सकैए। खएर.., ई तँ अपने मन ने गवाही दइए मुदा घरवाली घरबलाक बीच झगड़ा भेने अनेरे ने तेसर आबि घरकेँ लारत-चारत तँए मनेमे रखलौं। तैसंग ईहो विचार ने रहल जे अपन जन्मभूमि नइ छी, अपन जन्मभूमिमे नँगटो जिनगी लोक धारण केने रहैए (माने बच्चामे) मुदा ऐठामक जन्म तँ हमर शिक्षकक रूपमे भेल अछि, दोसर गाम छी, ऐठामक तँ जे परवासीक गरिमा अछि ओ तँ निमाहए पड़त किने। जहिना कलमक अपन गरिमा छइ, तहिना ने वाणी-विचारीक सेहो हेबा चाही। तँए आनठाम मुँहपर कनी ताला लगा कऽ लोककेँ रहए पड़ै छइ...।

जीवन लाल काका बजला»

"छोड़ू बितलाहा बात। तीस बर्खक ऐगला योजना बनाउ। जे आगू तीस साल केना रहब। एते नफ्फा तँ हमरा कमाईसँ अहाँकेँ भेबे कएल अछि किने जे पढ़ि कऽ मास्टर बनलौं हम आ हमरो मास्टरनी बिनु पढ़नौं बनि गेलौं अहाँ, तँए ऐगला तीस बर्खक मास्टरी सेहो अहींकेँ करए

पड़त।”

सेवा निवृत्तिक पछाइत जीवन लाल काका अपन जन्मभूमिमे अपन समाधि सेहो बनबए चाहि रहला अछि। मुदा जिनगीक बदलैत स्वरूप देख थकथका जाइथ। थकथकी ई रहैन जे दुनियाँमे पैघ-सँ-पैघ देशो अछि, माने जनसंख्योँक हिसाबसँ आ क्षेत्रफलोक हिसाबसँ, आ छोट-सँ-छोटो देश तँ ऐछे, जेकर अपन सभ किछु छइ, माने जीबैक साधन, रहैक नीक बास, साहित्य, भाषा, संस्कृति इत्यादि। जेकर रक्षा करत तखने ने ओ अपन अस्तित्व बनौने रहत। ऐठाम दुनियाँ दू विचारधारामे बहि रहल अछि। जेकर बीचक जे धारा छै ओ बहबाँइर भऽ गेल अछि। जेकर संख्या एक आ साएक बीच अनठानबे अछि। गामो-समाज ओही रूपमे अछि। अतीतक जे विचार पद्धति रहल ओ सर्वोत्कृष्ट ऐछे मुदा आइ जहिना दुनियाँक दूरी समटा रहल अछि, तहिना तँ वैचारिक दूरी बढ़ियो रहल अछि। जेकर फलाफल परिवार तक पहुँच गेल अछि..!

विचारक दुनियाँमे जीवन लाल कक्काक मन वौआ रहल छैन मुदा समाजक बीच कोनो गर नइ देख रहल छैथ जे एक शिक्षित जनक सेवा गाममे की होइ। ..मन अपना दिस नचलैन। नचिते देखलैन, अपन सभ किछु तँ समाजेक बीच ने रहल, जिनगी भरि उपैत केलौं, अपनो आ परिवारोक जहाँ धरि बनि पएल केलौं, गामक तँ किछु लेबो नहियेँ केलिऐ। मुदा जइ समाजसँ तीस-पैंतीस साल पूर्ब, निकैल बाहर गेलौं, तहिया आ औझुका समाजक बीचक जे परिवेश बनि गेल अछि, तइमे प्रवेश करब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी।

जीवन लाल कक्काक मन करखनो ठाढ़ होनि तँ करखनो झूकि जानि तँ करखनो खसि पड़ैन।

पतिकेँ विचार-मग्न देख पड़ोसीक तीन अँगना अनुराधा टहैल

ऐली। रंग-बिरंगक हवा-पानि तँ समाजमे चलिते रहैए। तइ बीचमे एकटा एहेन समाचार भेट गेलैन जे अनुराधाक मने उजगुजा गेलैन। दौड़ल आँगन आबि धियान-मग्न पतिकेँ देख लपैट कऽ बजली»

"भकुआएले रहब कि गाम-घरक हवो-पानि बुझब?"

'हवा-पानि' सुनि जीवन लाल काका अकबकेला। अकबकेला ई जे ने किछु हवामे देखै छिऐ आ ने पानिमे, तखन एहेन भाषा केतएसँ अपने गढ़ि लेली! तँए नीक हएत जे अपन प्रश्न पुछि पत्नीए-सँ उत्तर पाबी। बजला»

"अहाँ तँ देखते छी जे हम केतौ नइ गेलौं अछि, तखन हवा-पानि केना बुझब।"

अपन मास्टरी सुतरैत देख अनुराधा गंभीर शिक्षक जकाँ बजली»

"की कहब, अनर्थ होइए! गाम कलंकित बनैए।"

रंगमंचपर जहिना भावुक कलाकार भावना व्यक्त करैए तहिना अनुराधा अपन मनक अफसोच व्यक्त करए लगली। मुदा दर्शकसँ बेसी कलाकार जहिना अपने भावनामे वौआ अपन प्रदर्शन शुरू करए लगैए, तहिना अनुराधा समाजक कलंकक रूप देखए लगली। मुदा समाधान ओते असान अछि जे लगले बुझि जेती। किन्तु अखन शिक्षकक रूपमे ने पतिक आगू छैथ, किछु-ने-किछु तँ निर्णय करए पड़तैन। तथापि प्रश्न तँ बेकतीक वा परिवारिक नहि, समाजिक छी, जे समाजकेँ करब छइ। मुदा जइ समाजमे ने कोनो सार्वजनिक भूमि अछि जैठाम बैसार हएत आ ने दसगरदा कोनो काज अछि, एकर माने ई नइ जे ओहन काज नइ अछि जे लोक नइ करै छैथ, दुर्गापूजा दसगरदा सेहो होइए आ परिवारे-परिवारे सेहो होइते अछि।

..दसगरदा भूमिक माने भेल दसक जिनगीक संग चलब। मुदा छोट-सँ-छोट प्रश्न किए ने हौउ आकि पैघ-सँ-पैघ हौउ, गामो-समाज रंग-

रंगक अछि, जइमे समाजक कलंकक मुद्दाक रंग-रंगक समाधान सेहो ऐछे। मुदा केहेन समाजमे केहेन मुद्दाक समाधान अछि, ओ निर्भर करैत ओइ ठामक समाजक विचारधारापर।

..परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे शराबी शराब पीब अपन माए-बहिनकेँ माए-बहिन बुझैए मुदा दोसराक माए-बहिनकेँ वेश्या बुझैए। एहेन प्रश्नक विचार कोन रूपे होय..?

अपन चिन्तनधाराकेँ रोकैत जीवन लाल काका बजला»

"सोझे अलंकार सुनौने जाइ छी आ हम माने बुझबे ने करै छी, तँए कनी सोझरा कऽ बाजू जे की बात छिऐ।"

अखन धरि जे अनुराधाक मन विचारमे औनाइत गुर-घावक खिल जकाँ टहकै छेलैन से मुहसँ फुटैक चाप पाबि फुरलैन। अफसोस करैत बजली»

"अपने पड़ोसी मुनेसरा अछि ने, ओकर बेटी हाटपर सँ अबै छेलै, बाटमे गामेक एकटा छौड़ा कोनो करम बाँकी नइ रखलकै। से अहीं कहू जे एहेन होइ।"

अपन भार हटबैत अनुराधा पतिपर फेकलैन, मुदा परिवारसँ आगूक समाजक घटना छी। ओना, अपन-अपन परिवारमे तँ सभकेँ किछु-ने-किछु विचार करैक अधिकार तँ छैन्हे। मनमे अबैत-अबैत जीवन लाल काकाकेँ ओहिना भेलैन जहिना कोनो सितारवादनक स्वरक मिलानी करै काल बगलक कोनो लोहार नहाइपर ठाँहि-दे घन मारैए। ..मनमे उठलैन अपन पैंतीस सालक शिक्षण जिनगीमे जइ नैतिक समाजक पाठ बच्चाकेँ पढ़ौलिऐ ओ समाजसँ केते हटल अछि? इज्जत स्वरूप जइ वृत्तिकेँ नैतिक रूपमे विचारक दुनियाँमे मानि रहल छी ओ समाजमे केते अनुकूल अछि आ केते प्रतिकूल ई तँ समाजक दायित्व बनिते अछि किने। मुदा एक समाजिक प्राणी होइक नाते अपनो किछु-

ने-किछु दायित्व तँ बनिते अछि...।

फुसलबैत पत्नीकेँ फुस-फुसा कऽ कानक जड़िमे जीवन लाल काका किदैन कहए लगलखिन जे कानमे पड़िते अनुराधाराक मुँह कखनो चिकुरि जानि तँ कखनो सिकुड़ि जाइन।

फुसलबैत-फुसलबैत जीवन लाल काका फुसला कऽ कहलखिन»

“पैंतीस सालसँ जे गाम छोड़ि कऽ चलि गेल छेलौं से पुन: पैंतीस सालक पछाइत एलौं हेन, तैबीच धारक पानियोँ केते बहि गेल हएत आ पोखैरो-इनार साले-साले भरलो हएत आ सुखाएलो हएत, तँए असथिरसँ पहिने समाजमे बैसब तखन ने पएर पसारब।”

जीवनलाल काका जइ मने बाजल होथि मुदा अनुराधाकेँ नीक लगलैन। नीक लगिते मुँह बिहुसलैन।

बिहुसैत पत्नीक मुँह देख जीवन लाल काका बजला»

“हँ! सएह कहलौं।”

❑ साभार : गुलेती दास

बताहे बताह बनौलक

माघ मासक अमवसियाक भोर। आइए माघी नवरात्राक कलश-स्थापन सेहो होएत...। काल्हि साँझूपहर आर्यवीर बाबा बजार-ऑफिसक काज करैत साढ़े सात बजेमे घरपर एला। ओना, माघक साढ़े साते बजे छी, जेकरा जेठुआ हिसाबे पहिल साँझ आ भदवरियामे दोसर साँझ चाहे कतिका हिसाबे तेसर साँझ कहल जाएत मुदा, माघक हिसाबे तँ राति भइये गेल अछि।

अपन रूटिंगक हिसाबे आर्यवीर बाबा अबैबला काल्हिक ओते ओरियान आइए कऽ लइ छैथ, जतेकसँ अगियासी चलतैन। अपन नित-कर्मक किछु काज पछुआएल रहैन तँए नजैर कौल्हुका दिस नइ बढ़लैन।

एक तँ रस्ताक जराएल दोसर अनिवार्य काज पछुआएल रहने अगियासीक ओरियान परिवारोजन नइ केने रहैन। किए ने केने रहैन तेकर अनेको कारण अछि मुदा से सभ नइ, कनसोह नइ रहने छुटि गेलैन। कनसोह भेल जेकर भार कन्हापर अछि। माने ई जे चारि गोरे चारि रंगक काज करै छी, जइमे कोनो एहेन काज अछि जे परिवारक जिनगी-ले अनिवार्य अछि जे नइ केने कष्ट हएत, परेशानी हएत। ओहन काजपर नजैर नइ दऽ अपन जिम्मेक काज जे अनिवार्य नहियोँ अछि ओ कऽ लेब आ अनिवार्यकेँ छोड़ि देब...। एक तँ ओहुना भोरक अगियास

नइ पजरल तँ दिनक सृजन बाधित हएत, जखने सृजन बाधित हएत तखने अगियास बिनु पजरनौं निष्काम रहत।

भोर भऽ गेल रहए। ओना, भोरो-भोर केते रंगक अछि। कोनो पक्षीक अध-रतिया भोर होइ छै आ कोनोकेँ दिन-उगिया मुदा से सभ नइ, घड़ीक हिसाबे आकि मोबाइलिक हिसाबे चाहे रेडियोक हिसाबे साढ़े पाँच बजि गेल रहए मुदा, लगै राति जकाँ। राति जकाँ लगैक कारण रहै पैछला मास दिनक शीतलहरी, जइसँ ओस पाला बनि सघन भेल। बुझि पड़ै जेना अपनो हाथ-पएर अपन आँखि नइ देख पबैए तैपर सँ हिमांचल जकाँ कनकनी...। आने दिन जकाँ आर्यवीर बाबा घूरक जगह लग पहुँचला। घूरक केतौ पता नइ। सभ दिन बाबा अपने ओहन अगियासीक ओरियान कऽ लइ छैथ जेहेनक खगता रहै छैन। घूर नइ होइक कारण रहैन ओइ दिस सुधिये बुधि ने गेल रहैन। परिवारोजनक सभ अपने काज भरिमे समटा कऽ रहि गेल रहैन।

ओछाइनपर सँ उठि आर्यवीर बाबा सलाइ नेने घूर लग ठाढ़ रहैथ, जाड़े देह सिहरैत रहैन, मन भुटकैत आ ठोर कँपैत रहैन। घूर नइ देख मनमे एक्केबेर जेना आगि पजैर गेलैन। आगि ई पजरलैन जे जइ परिवारजनकेँ आइ-सँ-काल्हि जोड़ैक लूरि नइ अछि, जेकरा ई नइ अछि जे रस्तामे केते बाट-घाट पड़ैए, जेकरा डूमा घाट आ डूमा बाटक होश नइ छै, ओ केना उगा घाट आ उगा बाटक तुलसीपात जकाँ कंचन बनि चलि सकत! बताह जकाँ जोरसँ आर्यवीर बाबा चितकार मारलैन-

“ई घर रहैबला अछि! जँ रहौ चाहब तँ जीब कए दिन?”

घरे-घर परिवारजन सीरकक तरमे दाबल। किए किछु कियो बाजत। गबदी मारि सभ जाड़क मस्तीमे मस्त। नहेला पछाइत जहिना कियो ठोर पटपटबैत हनुमान चलीसा पढ़ैए- ‘महावीर विक्रम बजरंगी...।’ तहिना ठोर पटपटबैत आर्यवीर बाबा दोहरा कऽ बजला-

“ई घर छी आकि बतहाक बोन छी!”

‘बताहक बोन’ सुनि एगारह बर्खक पोता जे टी.बी.मे रामदेवकेँ व्यायाम करैत देख अपनो मने-मन करैत रहए... ।

बाबाक बड़बड़ाएब सुनि कोठरीसँ निकैल, लगमे आबि कहलकैन-

“बाबा, अहाँ अनेरे किए चिन्ता करै छी?”

विलासक बात सुनि आर्यवीर बाबाकेँ हनुमानजी जकाँ रूइयाँ-रूइयाँ ठाढ़ भऽ गेलैन। तरे-तर मन बमछऽ लगलैन। बमछैत बजला-

“तेहेन ने घरक लोक भंगबताह अछि जे बताह बनौने बिना नइ रहत।”

ओना, विलास कौलेजमे पढ़ैए मुदा बच्चेसँ सभ दिन प्रिंसिपलेक बीच शिक्षा पौलक, अखनो पबैए। माने ई जे जखने नर्सरीमे नाओं लिखौलक तहूठाम प्रिंसिपले रहथिन आ कौलेजमे तँ सहजे सभ दिने रहला अछि। प्रिंसिपलक बीच रहने विलास कहियो हेडमास्टर आकि आचार्यजी आकि पण्डीजीसँ पढ़ने नइ। ओना, विलास पढ़ैमे चञ्सगर तेहेन अछि जे केहनो गणितकेँ कैलकुलेटरमे मिनटो नइ सेकेण्डेमे सोझरा लइए। विलास कहलकैन-

“अहाँकेँ कथीक एते दुख होइए, अनेरे चिन्तासँ बताह भेल छी।”

❑ साभार : पसेनाक धरम

भैयारी हक

आने दिन जकाँ मनमोही काकी कदीमा, पीरार, इन्द्रकमलक फूल, ओलक गोभ, अड़िकंच आ तिलकोरक पात, सतंजा दालि आ सामा चाउर ओड़िया, हाँइ-हाँइ चाह बनबए लगली जे पति जाबे कलपर सँ मुँह-हाथ धोइ औता तइसँ पहिने चाह पहुँचा देब ने अपन करतब-परायण भेल। पुतोहुक आशा केते करब, हुनका तँ अपने बेड-टी चाही।

मनमोही काकी केतलीमे चाह-पत्ती दइले डिब्बासँ निकालिते रहैथ तखने मनमे उपकलैन जे अनेरे लोक बेटा-पुतोहुक भरोसे अपनाकेँ ओंगठा दइए। कहू जे जखन जन्म लेनिहारकेँ मृत्यु अनिवार्य छै जे सभ बुझै छी। मुदा तइ बीचमे बर-बेमारी, गाड़ी एक्सिडेन्ट, आकि गाछपर सँ खसैक आकि धार-धुरमे डुमैक चर्च-बर्च कहाँ अछि। जखन से चर्च नै अछि तखन एना होइ किए छै? जँ होइए तँ बीचमे केतौ-ने-केतौ अपन दोख तँ लोकक छइहे।

केतलीक चाह उधियेलैन। हाँइ-हाँइ मुहसँ फूकि भाफ निकाललैन। भाफ निकैलते खौलल चाह असथिर भेल। चीनी गिलासमे दऽ चाह छनलैन। दुनू गिलास चाह नेने मनमोही काकी पति लग पहुँचली। दुनू गिलास चाह देख सदानन काका बजला-

“एतै बैस कऽ अहूँ चाह पीबू, एकटा विचार करब अछि।”

मनमोही काकीकेँ अपन विचार रहैन, अपन जिनगी रहैन, अपन किरिया-कलाप रहैन। ओ आन केना आ किए बूझत। गुल्ली-डण्टा जकाँ जिनगीक किरियाक एहेन मिलान जे आगू फेकल जाएत। दू गिलास चाह पतिक सोझमे आनब ऐ दुआरे कर्तव्य बुझै छैथ जे अपना हाथमे चाह जेबाकाल मनमे बिसवास जैग जानि जे जिनकर हाथ पकड़ने छी हुनको हाथ चाह जेतैन तखन ने मन मानतैन जे पति-पत्नीक प्रेमिल जिनगी भेल। हम चाह पीलौं की नै, तैबीच जँ कोनो बौस नै अछि तँ पतिक कानमे देब अछि, की समस्या हुनका छैन से तँ ओ बजता। तइले दुनू गोरे विचारि लेब जे हँ तँ हँ आ नै तँ नहि। सएह ने हएत। एते बात मनमे अबिते मनमोही काकीकेँ सुफाँटि विचार जगलैन। जगिते बजली-

"ई तँ ओहने भेल जे गाए मारि कऽ जूता दान कियो करैए।"

असीम श्रद्धा सदानन काकाकेँ मनमोही काकीपर छैन। तँए मनमे किए उठतैन जे भोरे-भोर तेहेन बात बजली जे बिना दसटा गारि पढ़ने घरसँ निकलब कठिन अछि। बजला-

"जिलेबी-अमीरती जकाँ घुरछी लगा कऽ की बाजि देलिऐ। नै बुझलौं? पेरा जकाँ चापट बनेबै तखन ने बुझबै।"

अपन गुरुत्व देख मनमोही काकीक मनमे शक्ति जगलैन। शक्ति जगिते मन सुरखुरेलैन। सुरखुराइते मुहसँ बोल फुटलैन-

"केहेन बढ़ियाँ बात बजलौं जे लगेमे बैस चाह पीबू, एकटा विचार करब अछि।"

मनमोही काकीक सोझ-साझ बात सुनि सदानन काकाकेँ केतौ भौक-भाक नै बुझि पड़लैन। नजैरमे ऐबे ने केलैन जे कोनो 'बात' हौउ आकि 'विचार' पहिने गुचियाइए, तखन कटियाइए-टुटियाइए। अह्लादित होइत बजला-

"एना किए बियौहती लाबा जकाँ छिड़िआइ छी, सोझ मुहेँ बाजू।"

पतिक राग देख मनमोही काकीकेँ पहिने अनुराग उमरलैन। अनुराग उमैरते विराग जगलैन। विराग ई जगलैन जे पति-पत्नीक बियौहती बान्ह तँ पाछू बनल, पहिने दुनू मनुख भेलौं। बजली-

“ई जे कहलिऐ जे लगेमे बैस चाह पीबू से विचार हमरा विचारकेँ तोड़त की नै? अहाँ काजक औगातइमे भलेँ बजलौं से अपनो मन गवाही दइए। मुदा कहिया सोझहामे चाह आकि पानियेँ अखन धरिक जिनगीमे बैस पीलौं? अहाँकेँ आगू बैस खुअबैमे खुशी होइए तेहीसँ ने अपनो हीय जुड़ाइए। खेबामे हमरो कोनो कोताही किए हएत। तैसंग अपन चोरूका धएल-धरल खाइक छूट सेहो तँ दाइए दइ छी।”

सदानन काकाकेँ मनमे ओहिना जगलैन जेना रस्ता–बाट चलैत राही-बटोहीकेँ केतौ योगियो सँ भेँट होइए आ केतौ भोगियोसँ। तेतबे किए तैसंग भरथरी सन रजो ने रजोरज बिलैहते छैथ।

सदानन काकाकेँ मनमे जगिते मनुआँ ओलैर कऽ पलैर गेलैन। बजला-

“तीन दिन नोकरी छोड़ि गाम एला भऽ गेल। अखन धरि जे कमेलौं, घरकेँ अपन बुझि चलेलौं। किए ने अपनो दुनू परानी पेन्शन पकैड़ ऐगला जिनगी ससारब आ जे खेत-पथार अछि आकि नोकरियेक जमा-जिगिर अछि, तीनू भाँइकेँ सुमझा दिऐ।”

मनमोही काकीकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना हूँहकारी भरैत बजली-

“नीक हएत। देखै छी जे जेहने चेतन तेहने धिया-पुता, तेहेन-तेहेन ऐंठल भऽ गेल अछि जे कखनो मनकेँ थीर रहए देत? तइसँ नीक हएत जे भने तीनू भाँइकेँ अपन-अपन परिवार सुमझा देबइ। जानए जअ जानए जत्ता।”

अपन थाह थाहैत सदानन काका बजला-

“गमैया जिनगीमे बहुत ऊपर रहब।”

पतिक बात मनमोही काकी नीक जकाँ नै बुझि पेली तँए मन कनी आगू-पाछू घुरियए लगलैन। मुदा किछु बाजि नै रहल छेली।

सदानन काका काकीकेँ नीचाँ-ऊपर देखैत रहथिन जे परिवारक थाह पेब रहली अछि की नहि।

मुदा लगले मनमोही काकीक मनमे उठलैन- केतौ आनठाम छी जे बजैमे लाज-संकोच करब। अपना परिवारमे छी। अपने दुनू परानीए छी, तखन जे धखाइ छी ओ अनेरे। मन फुरफुरेलैन, बजली-

“कनी बिलगा कऽ कहियौ ने, जे केते रूपैआ महिना भेटत। तखन ने हमहूँ घरक खर्चा-वाड़ी जोड़ब। दुनूक मिलानसँ ने आगूक गाड़ी ससरत।”

पत्नीक विचारसँ सहमैत सदानन काका बजला-

“पेन्शनक हिसाबसँ परिवारक एक विभागक खर्च पकड़ाएत मुदा दोसर-तेसर तँ तैयो छुटिये जाएत। जखन सोलहन्नी घरक भार बेटा सभकेँ देबै तखन तँ ईहो ने सुमझा देबै जे जहिया हमरा कान्हापर घरक भार आएल तहिया परिवार केहेन रहै, आ आइ केहेन अछि, अगुरबारे ईहो पुछि लेबै जे बौआ कोन मुहेँ केते दूर धरि माने केते आगू धरि परिवारकेँ ससारबह।”

बजैक बेगमे तँ काका बाजि गेला मुदा पाछू उनैट तकिते मन पड़लैन गामक एकटा दू-भैयाँ भैयारीक परिवार। जइमे पनचैती करए गेल छेलौं। भेल ई जे दुनू भाँइक उमेरक दूरी पनरह-बीस बर्खक बीच। दोसर भाइक जन्म भेला तीन बर्खक पछाइत पिताक मृत्यु भऽ गेलैन। घरक भार जेठ भायपर चैल एलैन। अपने तँ पिताक अमलदारीमे मैट्रिके पास केलक जे घरक भार पड़ने ओतै ठमैको गेलै, मुदा पितातुल्य बनि छोट भाएकेँ बी.ए. धरि पढ़ेलक। बिआह-दान केला पछाइत जखन भिनौजी हुअ लगल तखन वएह छोट भाए जेठ भायकेँ कहलक-

"तूँ हमरा ले की केलह?"

छोट भाइक अनसोहाँत बोल जेठ भायकेँ बरदाश नै भेलै। पञ्चनमेमे बमैक कऽ बाजल-

"मुइलहा बापक बेटाकेँ जीतहा बेटा बना ठाढ़ केलिऔ, आ तोहीं हमरा कहै छेँ..?"

ले बलैया! दोसरे झगड़ा उठि गेल जे ऐठाम मुइलहा बाप की करए एला। मुदा जेठो भाइक तँ अपन कर्तव्यक शक्ति जगलै, तँए ओहो पाछू केना हटैत। तहिना जँ बेटो पुछि दिअए जे अहाँ हमरो-ले की केलौं? तइले जँ अपन तैयारी करि कऽ नै रखि लेब तँ विधान सभाक मंत्री जकाँ ने बाजए पड़त जे 'बुझले ने अछि।' तखन तँ यएह ने जे दुनू परानी अपन-अपन बेटाक प्रति केलहा काजक हिसाबक खतियान बना रखि ली...।

बिच्चेमे मनमोही काकी बजली-

"कोनो बेटाकेँ जे अपन हिसाब देबै से ओहो अपन हिसाब देत तखन ने! जहियासँ कमाइबला भेल अपन घरवाली आ धिया-पुता लऽ कऽ अन्तै रहैए, हमरे की करैए?"

पत्नीक विचार सुनि सदानन काका अपन पैरुखपनक परिचए दैत बजला-

"कियो नहियेँ देलक तँ हमरा खगबे की कएल। अपनो तँ काल्हि धरि दरमाहा उठेबे केलौं, ओहीमे सँ ने तीनू भाँइकेँ पढ़ा-लिखा बिआहो-दान केलिऐ आ दुनू परानी गुजरो केलौं। सएह ने कहबै। अहाँ की कहबै से तँ अहीं ने बाजब?"

सदानन काकाकेँ मनमोही काकीसँ पुछैक कारण रहैन जे जँ दुनू परानी मिलि ठाढ़ होइ तँ परिवारकेँ के कहए जे दुनियोँकेँ अपन लीला देखा सकैए, ई तँ परिवारे भेल। मुदा पतिक विचार मनमोही काकीकेँ

तीनू बेटाक बीच आनि ठाढ़ कऽ देलकैन। मनमे उठलैन माइयक सेवे की? माए तँ सहजे माइए भेली।

तीनू बेटाक बीच कएल अपन सेवाकेँ जखन काकी निहारए लगली तँ बुझि पड़लैन जे जइ हिसाबे जेठका-छोटकाकेँ छातीक दूध पिऔलिऐ तइसँ कम मझिलाकेँ नसीब भेल। मुदा ओइमे हमर कोन दोख। रोगा गेल रही, डॉक्टरे मना कऽ देलैन जे बच्चाकेँ दूध पिऔलासँ बच्चो बेमरयाह भऽ जाएत। एक बीमारी भगबैमे दोसरकेँ बजाएब नीक थोड़े होइत। तहीसँ ने मझिला दूधकटू भऽ गेल।

जेकरा बच्चेमे खिदखिदैनी पकैड़ लेलकै ओकरा जोड़बो साध थोड़े छल, मुदा तैयो जान तँ बँचाइए लेलिऐ। किछु अवधात जरूर भेलै। जइसँ दूधक फूल नै अन-पानिक फूल बनि ठाढ़ भेल। जे से बुधिमे कनी-मनी कमी आबिये गेलइ। जेठका-छोटका नीक माने अधिक दरमाहाबला नोकरी करैए आ मझिला गामेक स्कूलमे मास्टरी करैए। मुदा ओहो तँ पितासँ कम नहियेँ भेल। जही स्कूलमे पिता नोकरी केलखिन तही स्कूलमे ने ओहो नोकरी करैए...।

मनमोही काकी बजली-

“परिवारकेँ जे बुझि अखन तक केलिऐ से ऊपरबला जनै छैथ।”

पत्नीक बात सुनि सदानन कक्काक मनमे भेलैन, अनेरे सप्पत खाइ छैथ। ऊपरबला तँ सभ किछु जनिते छथिन तखन फेर गवाही रखैक कोन काज।

मुदा मनमे ईहो होइन जे जखन परिवारक सभ किछु बेटा सभकेँ सुमझा देबै, तखन तँ एहनो भऽ सकैए जे, जहिना ऑफिसक पैघसँ पैघ ऑफिसरपर सेवा-निवृतक पछाइत चोट खेलहा चपरासियो मोँछ ऐंठैत आँखि गुड़ैत रहैए। जँ कहीं तहिना भेल आ उसरागा गाछ जकाँ बुझि परिवारक सभ कियो छोड़ि दिअए तखन?

मुदा जँ दुनू परानियोँ एक विचारमे नै रहब तखन तँ अनेरे बाटमे बटमारि खाइत पहपैटमे पड़ब। जइसँ डेग-डेगपर पहपैट ठाढ़ होइत रहत। से पहपैट मेटबैले संगीक काज पड़बे करत। मुदा संगियोँ तँ संगीए होइए, नीकक बेरमे चुप्पी लाधि देत आ अधला बेरमे सोलहन्नी दोख लगा देत।

मुदा लगले मनमे उठलैन जे संगियोँ तँ रंग-रंगक होइए किने, कियो गंगामे पसि संगी बनैए तँ कियो कनगुरिया आँगुरसँ खून निकालि सिनेही बनैए। ओना, रस्तो-पेरा, चाहोक दोकान, गाड़ियो-सवारी आ पसीखनोमे संगी भेटते अछि। ओ तँ निर्भर करैए संगीक संगपना निमाहैक नजैरमे। मुदा से सभ बात सदानन काकाकेँ मनमे नै अँटकलैन। तेसरे विचार उठि गेलैन जे दुनू परानी-बीचक अधिक भार अपने ऊपर अछि, ओही भार बँटैले ने पत्नी सहयोगी भेली। जँ से सहयोगी नै होइतैथ तँ वंश बढ़बैयोमे एते कष्ट-पीड़ा सहि सहयोगी किए बनितैथ? तखन तँ भेल जे अपने पढ़ल-लिखल समाजमे बैस देश-दुनियाँक नीक गपो-सप्प करै छी, आ ओ घरमे असगरे घरैया काजमे सटल रहै छैथ। तखन जँ अपनो ई नै विचारब जे जेते रतिचोर अछि ओते बेसी शत्रुओ तँ पुरुखसँ बेसी नारीकेँ होइते छैन। जँ जिनगीमे किच्छो परहित नै केलौं तँ ओ जिनगीए की? तँए जँ तामस-पीड़ितमे किछु बाजिये जाइ छैथ तँ ओइपर ओतबे धियान देबा चाही जेते दइ-जोकर अछि। मन ठमकलैन। ठमैकते सदानन काका बजला-

“एकटा बात तँ छुटले रहि गेल। जँ ईहो नै विचारि लेब, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत?”

अपनाकेँ विचारी बुझि मनमोही काकीक मन मोहिया गेलैन। विचारी तँ असल तखने ने जे जेकर विचार करी ओकर जड़िसँ छीप धरि आकि मुहसँ नाँगैर धरिक करी। जँ से नै करब तखन तँ सूरदासक दालिक घी भऽ जाएत। तखन?

तखन तँ यएह ने नीक हएत जे विचार करैसँ पहिने विषयकेँ नीक जकाँ बुझि अपन विचार पुछि लिऐन। जँ सुफाँटि विचार छैन तँ बड़बढ़ियाँ, नै जँ उफाँटि छैन तँ ओकरा सुफाँटि बना बाजब। ओना, करैबला कर्ता तँ वएह भेला। हम तँ संग पुरैबला संगी भेलिऐन। ओना, काज करबाकाल तँ काज अपन नैना-जोगीनकेँ संग रखिते अछि। बजली-

"कोन एहेन बात पाछूसँ मन पड़ैए।"

मनमोही काकीक बात सुनि सदानन कक्काक मन मधुआ गेलैन। जहिना कड़ू लगलापर मुँहक ठोर-जीह सुसुआइए, खट्टा लगलापर चटपटाइए, तहिना भेलैन। खट-मधुर मुस्कान लाबा जकाँ भरभरा-भरभरा निकलए लगलैन! बजला-

"जहिना कोनो संस्थानमे पैछला पीढ़ी ऐगला पीढ़ीकेँ भार सुमझबै-काल कुरसी-टेबुलसँ लऽ कऽ खतिआन, बोही, तिजोरी तकक भार ने सुमझबए पड़ै छइ। तइ सुमझबैमे एकटा छुटि रहल अछि।"

जिज्ञासासँ जगैत मनमोही काकी बजली-

"से कथी छुटि रहल अछि?"

मनमोही काकीक जिज्ञासा देख सदानन कक्काक मन हटकलैन। हटैकते पाछू हटलैन। पाछू ई हटलैन जे परिवारक बात छी, सभ कियो- तीनू बेटो-पुतोहु आ अपनो दुनू परानी- तँ अपने भेलौं। मुदा परिवारो तँ समाजेक बीच अछि। जहिना नीक-अधलाक विचार परिवारमे होइए तहिना तँ समाजोमे होइते अछि, तखन औगुता कऽ किछु करब आकि विचारब से नीक नै हएत। तैबीच पत्नी तगेदा केलकैन-

"की कहए लगलौं आ चुप किए भऽ गेलौं?"

सदानन काका बजला-

"जे कहए लगलौं तइमे किछु विघिन-बाधा मनमे उठि रहल

अछि।”

‘विघिन-बाधा’ सुनिते मनमोही काकी बजली-

“केहनो विघनेस हौउ, ओ ते अपन मनेसँ ने पार लगौने ने पार लगत।”

“हँ, से ते हएत। जे अपन धरिक रहत ओ ने अपने पार लगौने पार लगत मुदा जे तइसँ आगूक रहत से केना हएत?”

सदानन कक्काक गोल-मोल बात मनमोही काकी नीक जकाँ नै बुझि पेली। मुदा मनमे विचारीक सरूप तँ चमैकते रहैन। बजली-

“अखन परिवारमे दू परानी भेलौं, आ दूटा बाल-बोध पोता-पोती भेल, जेकरा विचारी नहियेँ मानल जाएत, मुदा बेटा-पुतोहु तँ चेतन ऐछे, ओकरोसँ विचारि लेब नीक हएत।”

काकीक बात काकाकेँ नीक लगलैन। नीक ई लगलैन जे जेते बेसी लोक एकमत भऽ काज करब तेते ने ओ बेसी चमकबो करत आ झलकबो करत जइसँ सिझबो करत आ पकबो करत। तहूमे जखन जिनगीमे अपना जनैत कहियो, खेतमे काज करैबला खेतिहर जकाँ छह-पाँचक भीर नै गेलौं, भलेँ हाइ स्कूलक शिक्षक बनि जिनगी किए ने बीतेलौं, तखन साँचमे आँच की। बजला-

“अहाँक विचार मानि गेलौं। अखन तँ कृष्णानन विद्यालय जाइक तैयारीमे हएत, साँझू पहरक नाओं कहि दियौ, जे एकटा विचार करैक अछि।”

“बड़बढ़ियाँ।” कहि मनमोही काकी चुप भऽ गेली।

जिनगी भरि सदानन काका अपने पंचायतक हाइ स्कूलमे शिक्षक रहला। ओना, तीस सालक विद्यालयक जिनगीमे आन-आन शिक्षक सभसँ भिन्न चालि-ढालि रहलैन। जहिना गाए-महींसक बच्चाकेँ शुरूहेसँ सिङ्हानी लैत-लैत मलकारे मरखाह बना दैत तहिना सदाननो काकाकेँ

भेलैन। नमहर ग्राम पंचायतमे जहिया हाइ स्कूल खुजए लगल तहिया सदानन काका संस्कृत विद्यालयमे आचार्यक परीक्षा दऽ देने रहैथ, रिजल्ट पछुआएल रहैन। एक तँ पंचायतमे हाइ स्कूल बनि रहल अछि जइमे हमरो खगता छइ। सदाननक मनमे जगल, संस्कृत-मैथिली पढ़ाएब? उचित-उपकारक दुनू बाट मन देखलकैन। परीक्षासँ निचेन रहबे करैथ, दिन-राति एकबट्ट कऽ विद्यालय बनबैमे बलिदान केलैन। नमहर पंचायत, अखुनका जकाँ दू हजरिया नै, तेरह-चौदहटा गाम मिला पंचायत। अखन ओ चारि पंचायत भऽ गेल अछि। गामोक लोक बुझैत जे सदानन शिक्षक बनै-जोकर छैथे। तहूमे गाममे एहेन तीने गोरे छैथ जे शिक्षक बनै-जोकर छैथ।

स्कूल बनल, साल भरि तँ जहिना विद्यार्थी तहिना शिक्षक रहला मुदा साल भरिक पछाइत, जहिया दूर-दराज गाममे देवस्थान बनने देखनिहारक भीड़ लगैए तहिना विद्यालयक सेहो भेल। साल भरिक पछाइत विद्यार्थीक संख्या बढ़ल। लगमे स्कूल बनने किए कियो पएरे बेसी दूर जा कऽ पढ़त। तहूमे मैट्रिकक परीक्षा सौंसे बिहारक एकरंग होइ छइ। पढ़निहार केतौ पढ़ि सकैए। फीस बढ़ल, गौंआँक सहयोग बढ़ल, सरकारी अनुदान भेटल। वेतन निर्धारित भेल। सातटा शिक्षक भेला।

सदानन काकाकेँ साल भरि दरमहे बनबैमे लैग गेलैन। संस्कृत विद्यालयक सर्टिफिकेट रहैन। मुदा जखन सरकारीए मनता भेट गेल तखन गामक विद्यालय किए ने मानत। सभ शिक्षकसँ पाछू वेतन निर्धारित भेलैन। तहूमे केते मेलक वेतन भेल। प्रधानाचार्यकेँ पढ़बैसँ आँफिस सम्हारै धरिक भार तँए आनसँ दोबर दरमाहा भेलैन। सदानन काकाकेँ सबुर ऐ दुआरे रहैन जे अपन गाम-घरक बच्चाकेँ पढ़बै छी, दोसर समाजक संस्था छी, ओकरा पढ़ल-लिखल लोक नीक जकाँ जँ नै चलौत तँ संस्था ओहिना ने उपैट जाएत जहिना गाम-गामक पुस्तकालय, वाचनालय उपैट गेल। तैसंग मनमे ईहो होइन जे डेढ़े कोस ने, मुदा

आएब-जाएत तँ परिवारेसँ अछि, डेराक भाड़ा आ मेसक खर्चो तँ नहियेँ अछि। तँए सबुर रहबे करैन। मुदा तैयो मनमे कखनोकाल हेबे करैन जे आन जकाँ थोड़े पतित हएब जे दरमहो लेबै आ खानगियो फीस लेबै। घरसँ-विद्यालय जाइ-अबैमे जे घन्टा भरि समय लगैए तैबीच मुँह सीने रहै छी आकि जइ बच्चा-संग रहै छी ओकरा किछु सिखैबतो जाइ छिऐ।

अपन काज देख संतोष भेलैन। सबुरक गाछमे सबुरदाना फड़लैन। मुदा लगले एकटा असंतोष सेहो जगलैन। जगलैन ई जे जखन एके विद्यालयमे छी तखन विज्ञान आ अंग्रेजी पढ़ौनिहार किए निच्चाँ नजैरे देखैए? की ओ घटिया बुझैए आकि नीक-अधला कमाइक बुबकी छै?

फेर मनमे भेलैन जे अनेरे मन वौअबै छी। भाय, दुनियाँ बेकता-बेकतीक छी, जे जेहेन नजैरे देखत तेकरा हमहूँ तेहने नजैरे देखब। घरसँ बाहर धरि बाल-बोध तँ पसरले अछि, काजक कमी अछि, कमी अछि केनिहारक। जखन करते नै तखन धरता केतए-सँ औत। जखन करते-धरता नै तखन दुनियाँ कुन्ज केना बनत। ओ तँ सभ दिन उजड़ले-उपटल रहत किने! सदानन काकाकेँ जिनगीक बीच कएल अपन काज इतिहासक पन्नामे उनटलैन। उनैटते देखलैन जे बाल-बच्चाक सेवामे पिताक कोन काज बाँकी रहल, मन बमैक गेलैन। बजला-

“एकटा बात कहू ते कृष्णक माए, बेटा-बेटीक सेवामे अपना जीबैत की बाँकी रखलिऐ जे बेटा-बेटीक कर्जखौक बनब।”

पतिक बात सुनि मनमोही काकीक मन बेटा दिस भँसि कऽ चैल गेलैन। दुनू परानी सोझहा-सोझही रणभूमिमे ठाढ़ भऽ गेली। बेटाक गोली पकैड़ गुलेती चढ़ा छोड़लैन-

“से अहाँकेँ के कहलक जे बेटाक कलंक जोड़ै छिऐ।”

पत्नीक विचार मनकेँ झमका देलकैन। कहली तँ नीके बात। आइ

तक जखन बेटा-पुतोहु मुहेँ कोनो अवाच कथा नै सुनलौं तखन अछाहे भुकब, तँ कुत्ताक भुकब भऽ जाएत। विचार तँ सोझराएले अछि मुदा पत्नी जे अपना दिससँ ससैर बेटा दिस चैल गेली ओ केना अपना दिस औती? जँ नै औती तखन जे काज करए चाहै छी से केना हएत। कखनो बेटा दिससँ तँ कखनो पुतोहु दिससँ कखनो पोता दिससँ तँ कखनो पोती दिससँ आगूमे ठाढ़ हेबे करती।

जखने से भेल तखने झंझ-मंझ हेबे करत, जखने झंझ-मंझ हएत, तखने झंझट ठाढ़ हएत, जखने झंझट ठाढ़ हएत तखने कोट-कचहरीक ममिला हएत! कोट-कचहरीकेँ एतबो होश नै छै जे जइ बच्चाकेँ काल्हि कौलेजमे फीस दिअ पड़तै, जइ उतरीधारीकेँ तेरह दिनक बीच उतरी हेट करए पड़तै, ओकरा केना तीस-तीस बरिस, चालिस-चालिस बरिस विषयकेँ बुझैएमे लैग जाइए?

पाशा बदलैत सदानन काका बजला-

“हम ते घरसँ बहार धरि, दिन-राति बच्चाकेँ छोड़ि बोनाएल रहै छेलौं, असल तँ अहींक ने लगौल फुलवाड़ी छी।”

‘फुलवाड़ी’ सुनि मनमोही काकीक मन मोहिया गेलैन। मोहिया कऽ ओइ पीड़ा लग पहुँच गेली, जइ दिन बच्चाकेँ जन्म देने रहथिन। मुदा थाल-कीचमे पड़ल कमलक बीआ जनैम पानिक तरे-तर आगू उठैत जहिना ऊपर आबि कमलासन्न पहुँचैत तहिना मनमोही काकीक मनमे भेलैन, बजली-

“भने साँझू पहर चारू गोरे बैस कऽ विचारि लेब। अखन काजो-उदेमक बेर अछि।”

अपन पिण्ड छुटैत देख सदानन काका बजला-

“काजकेँ काज जकाँ बुझबै, ई नै कहब जे बिसैर गेलिऐ। अखुनका कहल रहत तँ भरि दिन मने-मन विचारबो करब।”

पत्नीकेँ लगसँ हटिते सदानन कक्काक मनमे उठलैन, जेते पिता हमरा पढ़ैमे खरच केलैन, खरच की केलैन जे बच्चामे घरक काज नै करौलैन, किताबेक संग खैयो-पीबै आ रहैयोक बेवस्था विद्यालैयेमे रहए, तइसँ केते बेसी खरच बेटाक पढ़ैमे केलौं? जँ से नै केलौं तँ बिहार सरकारक उच्च कोटिक पदाधिकारी केना भेल। एकटा नै दू-दू टा। तेसरो तँ अपना लग तक पहुँचले अछि। जेठ बेटा रमानन जखन कौलेजमे पहुँचल, ओही समय हमरो दरमाहामे संशोधन भेल, जइसँ आमदनीमे उछाल आएल। अपन गमैआ जिनगी रहए, अठवारे धोती-कुर्ता-गंजी साफ करैत रहलौं, अमल-मे-अमल तमाकुल अछि, सेहो वाड़ीमे उबजैबते छी। बच्चेसँ कृष्णानन मन्द बुधिक रहल। दूधकटू भेने अहिना होइ छइ। मुदा ओहो तँ कौलेजसँ एम.ए. पास करि कऽ ओही हाइ स्कूलमे शिक्षक अछि, जे अपने छेलौं। तेसर श्यामानन वित्त विभागमे पदाधिकारी अछि। तीनूक बीच बँटवारा करब।

जहिना परिवारमे नव काज उठने, बच्चाकेँ स्कूलक नीक रिजल्ट पेने, आगूक जिज्ञासा जगै छै तहिना कृष्णानन दुनू परानीक बीच जगल। अपन नैहरसँ सासुर धरिक अनुभव कृष्णाननक पत्नीकेँ। गामो तँ जीवन-विज्ञानक विद्यालैये छी। मुदा कृष्णाननक जिनगी बन्हौटा जकाँ, तँए बेवहारिक समटल काजक अनुभव रहैन। तहूमे माए-बापक बीच बेटा जेहेन सहलोल होइए, तहिना। चाह-पीला पछाइत चारू गोरे- सदानन, मनमोही, कृष्णानन आ हुनक पत्नी- सुशीला- एकठाम बैस पहिल विचार केलैन जे बेटा-पुतोहुकेँ जे किछु बजैक हएत ओ माएकेँ कहथिन। पिता सुननिहार हेता। माइक विचारक पाछू अपन विचार रखता...।

सदानन बजला-

“परिवारक सभ छी, ओ दुनू भाँइ ऐठाम नै अछि, मुदा ओकरो हक-हिस्सा तँ छइहे। तँए जँ अपना चारू गोरे नै विचारि लेब तँ पाछू झंझट हएत। जँ एकरंगाह काज तीनू भाँइक बीच रहैत तँ किछु संतोखो

होइतए मुदा ओ दुनू सरकारी मशीन जकाँ घटबीए हिसाब जोड़ैए। तैठाम घटाउकेँ केना बढ़ौउ बनौल जाएत?"

सुशीलाकेँ नैहर-सँ-सासुर धरिक अपन माए-बापसँ लऽ कऽ पतिक माए-बापक सेवा धरिक सेवाधर्म मनमे जगले रहैन, सासुकेँ कहलखिन-

"माए, हिनकर तीनू बेटा एक कोखिक छैन, मुदा भैयारीमे समाज माझिल-साझिल बेटाकेँ जेठ-छोटसँ किरिया-कलापमे हटा देने छै जइसँ जेठौंस-छोठौंस केते रोग परिवारमे पकैड़ नेने अछि। मुदा तीनू भैयारीमे जे सेवा करैत रहलयैन, ओहो तँ नजैरमे रखि कऽ बजथिन किने?"

मनमोही बुझबे ने केलैन जे पुतोहु की बजली। बिनु बुझनहि बाजि उठली-

"हमरा लिऐ तीनू बेटा एकेरंग अछि।"

सदानन कक्काक मनमे जोड़क झमार लगलैन। सहैम गेला। तखन?

तखन तँ यएह ने नीक जे अखन अहिना जक-थक रही। मुदा जिनगियोक तँ ठेकान नै अछि, जँ तीनूकेँ मन-माफित विचार बना नै देबै तखन तँ पछाइत परिवार रणभूमि बनि जाएत! कृष्णाननकेँ कहलखिन-

"बौआ, जेठ-छोट भैयारी परिवारमे किए बाधा उपस्थित करत, किए ने सबहक राय-विचारसँ निर्णय कऽ ली।"

❑ साभार : गामक शकल-सूरत

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर
एगच्छा आमक गाछ
प्रीगर शत्रु
दहेजुआ गाए
गठूलाक गारि

गण्डा
अब-तब
झूठे
उजगी
जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू
नोकरिहारा
अनका बेर ओंघी
लगबे ने कएल
ओ दिन

पान पराग
फोंक मकड़
झकास
ठोररंगू
हकार

ओझरी
दोती बिआह
कचहरिया रोग
नटकिया गति
भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल
पछताबा
परिवारक प्रतिष्ठा
पागलखाना
खाए चाहैए

गामे उपैट गेल
खतियाएल घर
किछु ने फुरैए
तिलकोरक तरुआ
पटोर

बेटाक चलैत
उग्रघारा
बेटीक कुभेला
दोहरी हाक
खिलतोड़

बापक चलैत	पाइक इज्जत
गाम बिसैर गेल	माघक घूर : 1
ठकहरबा	मधुमाछी
समैयक बेरबादी	मति-गति
न्याय चाही	नैहराक धाड़
रिजल्ट	माघक घूर : 2
बाल बोध	चहकल विचार
अपन गारि अपन दुआरि	राक्षसक झड़
सरही सौबजा	सद्विचार
अउतरित प्रश्न	पोखरिक सैरात
पनियाहा दूध	मनकमना
कन्हा भँट्टा	कटौज
फलहार	किछु ने
गावीस मोइस	हथियाएल खुरपी
निनिया देवीक आराधना	झुटका विदाइ
कनियाँ-पुतरा	खुदियाएल
मानसरोवर यात्रा	गलती अपने भेल
गामक शकल-सूरत	बत्तु
मितक प्रयोजन	असिरवाद उलैट गेल
चैन-बेचैन	उड़हैड़

जिगेसा

लेहाज

जानक मोल

समर्पण

स्तब्ध

भोरक झगड़ा

शालीनता

पान

पवनक विवेक

हरवाहि

समरथाइक भूत

समता

सुखाएल सूरत

खजाना

मौसी

कर्ज : 2

टुटल मनक जुटान

ऐँठ साड़ी

अस्तित्वक समाप्ति

जाति नहि पानि

विदाइ

कर्तव्यपरायन सुगा

निशाँ

दान-दैछना

माइक वचन

मथाहाथ

पाइक मोल

गंजन

नमहर फेरा

अपन काज

बेटपन

उमेद

एकोटा ने

कथनी नै करनी

मुसाइ पण्डित

घरवास

भूल

बत्तीसोअना

पुरनी भौजी

अर्द्धांगिनी

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेँमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भोँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्रूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।


पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 50

9 789388 421683